International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 9, pp: 620-623 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

प्राचीन भारतीय साहित्य दर्शन में **बौद्ध साहित्य में** शिक्षा– एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ0 राम प्रवेश सिंह
व्याख्याता, इतिहास विभाग,पैरू महतो सोमरी महाविद्यालय बिहारशरीफ ,नालंदा, बिहार
(पाटलिपुत्रा विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत)

Date of Submission: 15-11-2020 Date of Acceptance: 30-11-2020

सार :- बौद्ध-दर्शन नैतिक-जीवन का दर्शन है। भगवान् बुद्ध ने तत्व-मीमांसा के विवेचन में समय लगाना अनुपयोगी समझा, क्योंकि इससे मनुष्य के जीवन को उन्नत करने में सहायता नहीं मिलती। बुद्ध का मनाना था कि जिन विषयों के समाधान के लिए पर्याप्त प्रमाण न हों, उनके सामाधान की चेष्टा व्यर्थ है। बुद्ध ने पूर्व-प्रचलित अनेक दार्शनिक मतों को युक्ति-हीन ओर निराधार प्रतिपादित कियां उन्होंने कुक्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं होता।शिक्षा के उद्देश्य यों तो सभी भारतीय दर्शन दुःखवाद से आरम्भ करते है। तथा दर्शनों में शिक्षा का उद्देश्य दुःखों से मुक्ति दिलवाना माना गया है, परन्तु बौद्ध-दर्शन विशेष रूप से दुःखवादी है। बौद्ध-दर्शन के अनुसार जीवन में दुःख है, ओर शिक्षा इन दुःखों को दूर करने का मार्ग बतलाती है। बोद्ध-दर्शन के आधार चार आर्य सत्य हैं, यथा-जीवन दुःखों से परिपूर्ण है, दुःखों का कारण है, दुःखों का अन्त समभव है तथा दुःखों के अन्त का उपाय है। वेदान्त के समान बौद्ध-दर्शन में भी दुःखें का करण हमारा अज्ञान माना जाता है। औदयदि इनअज्ञानको दूर किया जा सके तो दुःखों का अन्त हो सकता है। अतः शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को अज्ञान से मुक्त करना है जोकि दुःख का कारण हे। ।।

प्रस्तावना :- सम्पूर्ण दुःख तो सभी समाप्त हो सकते हैं, जबकि इस जन्म जरा मरण से छुटकारा मिल जाए, क्योंकि जबतक यह नाम-रूपात्मक शरीर है, यह संसार है, और इसके सा मनुष्य का सम्बन्ध हे तबतक किसी न किसी प्रकार का दुःख लगा ही रहता हो जिसे हम सांसारिक सुख समझते है, वह भी क्षणिक होता है, और उसके अन्त में पुनः दुःख आकर घेर लेते है।

बौद्ध-दर्शन के अस प्रकार निराशावादी दृष्किोण के आधार पर व्यावहारिक शिक्षा के कोई उद्देश्य निर्धारित करना सम्भव नहीं दिखाइ देता , यद्यपि बौद्धों ने एक विकसित शिक्षा प्रणाली प्रदान की है, जिसके अपने विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट दृष्टिकोचर होते विकसि शिक्षा प्रणाली प्रदान की है, जिसके अपने विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है बौद्ध-शिक्षा प्राणाली के उद्देश्यों का सीध सम्बन्ध तत्व चिन्तन से दिखाई नहीं देता।भगवान् बुद्ध ने सज्जीवन के लिए जो अष्टांग-मार्ग प्रदर्शित किया है उसी को हम शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों के बारे में घटित कर सकते है।

विवेचन :- बौद्ध दर्शन में छात्र संकल्पनाबौद्ध-दर्शन के "माध्यमा प्रतिपदा" (middle path) सिद्धान्त के अनुसार विद्यार्थि का कोई अतीत है तथा उसका भविष्य भी है। छात्रों का वर्तमान अस्तित्व उसके पूर्वजन्म के कर्म तथा बाल्यावस्था के संस्कारों पर निर्भर है। वह जो कुछ है, अकस्मात् नहीं बना है, परन्तु उसके अतीत के संस्कार उसके साथ जुड़े हुए है। छात्र का भविष्य उसके वर्तमान संकल्पों तथा कर्मों पर निर्भर है। अध्यापन कार्य में जीवन का यह दृष्टिकोण बड़ा सहायक होता है। अध्यापन से पूर्व, छात्र की यथा-स्थिति का पता लगाना हर अध्यापक के लिए आवश्यक है। वह सिद्धान्त एक ओर सभी छात्रों में निहीत एकता की हमें याद दिलाता हैं, तो दूसरी ओर उनमें अवस्थित भिन्नता का कारण भी प्रस्तुत करता है। बालक का वर्तमान स्वरूप अतीत के संस्कारों का परिणाम है और चूँकि सभी छात्रों का अतीत एक समान नहीं होता, अतः उनमें विभिन्नता होना स्वाभाविक हैं। प्रत्येक छात्र कीअध्ययन-क्षमताएँ एक-सी नहीं होती, अतः प्रत्येक छात्र के स्तर के अनुरूप अध

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 9, pp: 620-623 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

ययन-अध्ययपन किया का संयोजन करना अध्यापक के लिए आवश्यक है। प्रत्येक बालक का शरीर है, मन है तथा चेतना है। ये ही वे साध न है, जिनसे वह शिक्षा ग्रहण करता है, वह साधन-सामग्री है, जिससे अध्यापक बालक को अच्छा व्यक्ति तथा अच्छा नागरिक बना सकता है।

बौद्ध-दर्शन के अनुसार भावी विकास की क्षमताए, वर्तमान अस्तितत्व में विद्यमान है। बालक के वर्तमान अस्तित्व में जो विद्यमान नहीं है, उससे भिन्न उसे नहीं बनाया जा सकता। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होता। भावी कार्य के बीज वर्तमान कारण में विद्यमान रहते है। इस कारण-कार्य-नियम को बौद्ध दर्शन में "प्रतित्यसमुत्पाद" का नियम कहा जाता है।

इससे यह अभिप्रेत निकालना सही नहीं होग, कि बौद्ध दर्शन के अनुसार छात्र की नियति पूर्व निर्धारित है और वह स्वेच्छया कुछ बन ही नही सकात। बौद्ध-दर्शन में कारण कार्य सम्बन्ध के साथ ही यह भी प्रतिपादित किया गया है कि उसका "भविष्य" है और उसका भविष्य सम्यक-संकल्प पर निर्भर करता है। बौद्ध-दर्शन में विश्वास रखने वाला अध्यापक छात्रों से भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारण कर सकता है, उसकी क्षमताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर सकात है, सही प्रकार का संकल्प करने में छात्र की सहयाताकर सकता है, और उसे अपने भावी-जीवन की दिशा निर्धारित करने में मार्ग-दर्शन कर सकता है। बौद्ध-दर्शन जाति-गत भेदों को नहीं मानता तथा सभी मनुष्यों के लिए शिक्षा सुलभ करना चाहता है। शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मानव का अधिकार है। सब दुःखों से मुक्त होना चाहते है, और बिना ज्ञान के दुःखों से छुटकारा नहीं पाया जा सकता। निर्वाण सब मनुष्यों का लक्ष्य है, और निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करने वाली शिक्षा सबको सुलभ होनी चाहिए।

बौद्ध दर्शन में अध्यापक-संकल्पना

बौद्ध-दर्शन के अनुसार वही व्यक्ति शिक्षक हो सकता है, जिसने चार आर्य-सत्यों को मझा लिया है तथा जिसका स्वयं का जीवन बुद्ध द्वारा प्रदर्शित अष्टांग मार्ग के अनुरूप व्यतीत होता है। जैन-दर्शन के समान बौद्ध-दर्शन में भी दो प्रकार के शिक्षकों की कल्पना की गई हैं। आर्चाय छात्रानुशासन का अधिकार होता है तथा ।उपाध्याय अध्ययन-अध्ययपन का। कारण कदाचित चे ही हो, जिनका उल्लेख जैन-दर्शन के अन्तर्गत किया गया है।

बौद्ध-दर्शन में शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए किसी को गुरू बनाना अनिवार्य है। बौद्ध शिक्षा-प्रणाली में आधनिक संस्थागत शिक्षा का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, जिसमे एक आचार्य के अधीनस्थ अनेक उपाध्याय और प्रत्येक अपाध्याय के पास छात्रों का एक छोटा-सा समूह अध्ययन करता था। अध्यापको के पारस्परिक समबन्धों को स्नेह-पूर्ण बनाए रखने के लिए आचार्य कुछ नियम निर्धारित करता है। शास्त-सम्मत होते है। इस प्रकार उपाध्यायय का काम अध्ययन-अध्ययपर करना है, तो आर्चाय का काम न केवल छात्रों में अनुशासन बनाए रखना है, अपितु उसका दायित्व शिक्षकों के बीच अनुशासन कायम रखने का भी है।

बौद्ध शिक्षा के मूल्य

सम्पूर्ण बौद्ध-शिक्षा प्रणाली में बौद्ध दर्शन का मध्यमा-प्रतिपदा सिदान्त परिलक्षित होता है बौद्ध-दर्शन में जीवन के किसी ऐकान्तिक मूल्य पर आग्रह दिखाई नहीं देता। जैनों के समान न तो पूर्ण विरक्ति्त वर आग्रह है।, न चाचर्वाक दशन के समान केवल सांसारिक सुख को ही सर्वस्व माना गया ह।

(1) आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक विषय के बीच मध्यम मार्ग - बौद्ध शिक्षा के पाठ्यक्रम का अवलोकन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बौद्ध दर्शन में एक ओर बौद्ध धर्म की शिक्षा पर आग्रह है तो दूसरी ओर व्यावहारिक जीवनकी शिक्षा की उपेक्षा नहीं की गई है। यदि एक ओर ध्यान, चिन्तन-मनन पर आग्रह है, तो दूसरी ओर आजीविका की शिक्षा पर भी बल दिया गया है।

(2) नैतिक मूल्य - बौद्ध दर्शन द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का। जो विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है उसमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि मनुष्य के विकास मे नैतिक कारण कार्य सिद्धान्त सक्रिय रहता है। बौद्ध दर्शन के अनुसार हमारा संकल्प हमें

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 9, pp: 620-623 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

निश्चित रूप से नैतिक बनाता। है बौद्धों द्वारा प्रतिपादित द्वादश निदान (जन्म-मरण का किरण सत्यंकल्प करें तो निश्चित रूप से नैतिक भी बन सकते है।

(3) शारीरिक मूल्य - यद्यपि इच्छाओं का त्योग ती इन्द्रियों का दमन नैतिक जीवन के लिए आवश्यक है, तथापित शारीरिक स्वास्थ की उपेक्षा करना उचित नहीं है। बुद्धि के अनुसार , "शरीर को स्वस्थ रखना हमारा कर्तव्य है, अन्यथा विवेक का दीपवक प्रज्जवलित नहीं किया जा सकता, तथा मनकी स्वच्छ तथा तृढ़ नहीं बनाया जा सकता।"

(4) आर्थिक मूल्य - बौद्ध- र्शन में एक ओर सांसरिक सुखों की लालसा का तयोग करने का उपदेश दिया गया है तो दूसरी ओर उचित विधि से आजीविका कमानक का भी उपदेश है। विहारों मे यद्यिपित कोई भिक्षु सम्पति नहीं रख सकता थ, परन्तु संघ को सम्पति रखने का अधिकार था। इस प्रकार आर्थिक मूल्य की उपेक्षा न करके तथा गत ने इसमें भी माध्यम-मार्ग का अवलम्बन करने का उपेश दिया।

(5) सामाजिक मूल्य - अन्य भारतीय दर्शनो का आग्रह वैयक्तिक उन्नति तथा वैयक्ति विकास पर रहा, इसीलिए, अश्यापन-प्रणाली भी वैयक्तिक बनी रही। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में छोटे-छोटे समूहों में शिक्ष प्रदानकरने की प्रथा आरम्भ हुई इन समूहों में शान्ति तथा समन्वय बनाए रखने के लिए अनुशासनके नियम बनाए। गए और इस प्रकार सामाजिक नियम ती अनुदेशों के पालन पर। आग्रह रक्खा गया।

बौद्ध दर्शन के अनुसार मुनष्य कोई भी कार्य करें, वह चाहे गृहस्थ हो अथवा भिक्षु, वह नैतिक जीवनका पालन कर सकता है। अपने आप को सामाजिक हित के लिए समर्पित करके मनुष्य सुख, शान्ति तथा आनन्द प्राप्त कर सकता है, जबकि तृष्णा आकांक्षाएँ आदि स्वर्थी वृतियाँ केवल दुःख का कारण बनती है। सम्पूर्ण बौद्ध शिक्षा-प्रणाली में भगवान् बुद्ध की मध्यता-प्रतिपदा परिलक्षित होती है।

निष्कर्ष :- यों तो सभी भारतीय दर्शन दुःखवाद से आरम्भ करते है। तथा दर्शनों में शिक्षा का उद्देश्य दुःखों से मुक्ति दिलवाना माना गया है, परन्तु बौद्ध-दर्शन विशेष रूप से दुःखवादी है। बौद्ध-दर्शन के अनुसार जीवन में दुःख है, ओर शिक्षा इन दुःखों को दूर करने का मार्ग बतलाती है। बोद्ध-दर्शन के आधार चार आर्य सत्य हैं, यथा-जीवन दुःखों से परिपूर्ण है, दुःखों का कारण है, दुःखों का अन्त समभव है तथा दुःखों के अन्त का उपाय है। वेदान्त के समान बौद्ध-दर्शन में भी दुःखें का करण हमारा अज्ञान माना जाता है। औदयदि इनअज्ञानको दूर किया जा सके तो दुःखों का अन्त हो सकता है। अतः शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को अज्ञान से मुक्त करना है जोकि दुःख का कारण हे। ।।

REFERENCES:

[1]. Saiyidanin K. G. The Humanist Tradition in India. Education Thought, Bombay. Asia Publishing Hoous, 1966.
[2]. The Complete Works of swami Vevekanand in 7 Vols. Almora: Advaita Ashrama, 1947.
[3]. Besant, Annie, Essentials of Indian Education.Dr. Besant's Speches in the central Hindu College,1899-1972.
[4]. Besant, Annie: Education as a National Duty, 1903.
[5]. Education for the New era 1919.
[6]. Education in the Light of Theosophy, Adyar Pamphlet No. 16.
[7]. Swami dayanand, satyartha Prakash.
[8]. Sri Aurobindo, A System of National Eucatioon, Calcutta Arya Publishing Hous, 1946.
[9]. Bhattachary P. K., A Scheme of Education, Pondicherry : Sri Aurobino Ashram, 1952.
[10]. Pavitra, Education, and the Aim of Human Life, Pondicherr: Sri aurobindo ashram, 1961.
[11]. Gandhi M. K.m, Basic Education, Almedabad, Navijivan Publishing House,1951.
[12]. Mukerii H. N. Education forfulness, Bombay: Asia Publishing House 1962.
[13]. Tagorer. N.: Sadhna; Mc- Millan & Co.
[14]. Chaube S.P.: Recent education Philosophies in Indina. Agra : Ram Prasadand Sons 1967.
[15]. Kabir Humayun, Indian Philosophy of education, Bomby: Asia Publishing House, 1962.
[16]. Porn GIRO 3TO PIETĄ affach 3TTEIT, ofege: farct Te 3tch TGH 1972.
[17]. Sharma chandra dhar: a critical survey of Indian Philosophy Delhi, Motiaal Banarsidas, 1964.

[18]. Gandhi M. K.: To the Students, Varanish: Sarva seva sanch.
[19]. Bhave Vinoba: Shikshan Vichar, varanshk: Sarva seva Sangh.
[20]. radhakrishna S. Bhagwat geeta, London: Routledge & Kegan Paul.
[21]. Hiriyanna M: Essentials of Indian Philosophy, London: George Allen & Unwin, 1956.
[22]. Broudy Harr, Building a Philosophy of Education (Indian edition) New Dehli: Prentice Hallof Indian (Private) Ltd. 1956.
[23]. Division of Internaitonal Education, International Relations Brach: Education inthe U.S. SR. Bulletin 14, Washington: Department of Health /educaiton & welfar, 1957.
[24]. Blackham H. J. Six Existentialish Thinkers, London: Routledge & Kegan Paul Ltd. 1952.
[25]. Park Joe (Ed) Selected reding in the Philosology of Educaiton Newyour; The Mc-Millan company, 1963.
[26]. James, william, a New Name fior Some Old Ways of Thinking Newyour longma Green 1960.
[27]. Bulter J. D., rourimupnes, Newyourl: Harper and Bros. 1951
[28]. Weber, C.O. Basic Philosophies of Education. New your: Rinehart &/co. Inc.1950.
[29]. Bogoslovsky B.B. The /Ideal School, New Your: The Macmillan 1936.
[30]. N.S.S.E. Philosophy of Education 41st and 54th Year Books University.